**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 629-631
www.allresearchjournal.com
Received: 08-12-2023
Accepted: 12-01-2024

**Dr. Usha Kumari JB**
Associate Professor, Department of Hindi, NSS College, Pandalam, Kerala, India

**Corresponding Author:**
**Dr. Usha Kumari JB**
Associate Professor, Department of Hindi, NSS College, Pandalam, Kerala, India

# निराला की कविताओं में छायावाद और प्रगतिवाद युगीन प्रवृत्तियाँ

**Dr. Usha Kumari JB**

**DOI:** https://doi.org/10.22271/allresearch.2019.v5.i1f.11514

**सारांश**
आधुनिक काव्य धारा में द्विवेदी युग के अंत में एक नयी काव्य धारा, स्थूल के प्रति सूक्ष्म की प्रतिक्रिया के रूप में प्रवृत्त होने लगी। भाव पक्ष में और शैली पक्ष में आयी यह नवीनता छायावादी काव्य धारा की प्रमुख विशेषता रही। छायावाद के प्रमुख कवि 'महाप्राण' निराला के व्यक्तित्व का विकास उनके आगे की कविताओं में स्पष्ट रूप से दिखायमान रहा। प्रकृति रमणीयता और कल्पना लोक में विचरण करनेवाले कवि में धीरे-धीरे सामाजिक प्रतिबद्धता संचरित होने लगी। फलस्वरूप उनकी कविताओं में सामाजिकता का विद्रोह प्रबल दर्शायमान रहा। अर्थात मानवतावादी कवि निराला की प्रगतिवादी कविताओं में उनका मानवताबोध अधिक मात्रा में प्रस्फुटित हुआ।

**कूटशब्द:** स्वच्छन्दप्रियता, युगीन प्रवृत्ति, मानवीकरण, चेतना, सुप्तावस्था, रुपायमान, मनोबल, स्वावलंबी।

## प्रस्तावना
प्राचीन कालीन हिन्दी साहित्य रचनाएँ काव्यरूप में लिखी गयी थीं। दोहा-चौपाई-सोरठा आदि तत्कालीन समय की काव्य पद्धति रही। आधुनिक काल में काव्य लिखने की रीति और भाषा में बदलाव आये | दोहा - चौपाई पद्धति के बदले छोटी-लंबी कविताएँ बडी मात्रा में लिखने लगीं। ब्रज, अवधी जैसी प्राचीन बोलियों के स्थान पर खडीबोली का व्यापक प्रयोग होने लगा | यह कहना उचित है कि आधुनिक काल में खड़ीबोली भाषा के प्रचार-प्रसार में ब्रज, अवधी जैसी प्राचीन काव्य भाषाएँ लुप्त हो गयीं।

आधुनिक काल के छायावाद युगीन चार- स्तंभ कवियों में सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का स्थान उल्लेखनीय है।

प्रकृति चित्रण, सौंदर्य वर्णन, मानवीकरण, स्वच्छन्दप्रियता आदि छायावाद युगीन प्रवृत्तियों से युक्त कविताएँ उन्होंने अधिक लिखी हैं। स्वच्छन्दप्रियता के आधिक्य के कारण ही 'छायावाद' का दूसरा नाम 'स्वच्छन्दता वाद' रहा। निराला ने काव्य लिखने की रीति में इस प्रवृत्ति को अपनाया। उनके अनुसार कविता सभी नियमों से अर्थात छन्द, अलंकार जैसे काव्य शोभा बढाने वाले लक्षणों से मुक्त होनी है। इस तौर पर पहला कदम उनका ही रहा। 'जूही की कली' नाम से एक छन्द मुक्त कविता लिखकर उन्होंने काव्य जगत में एक बडी क्रांति का आरंभ कर दिया। इसका सकारात्मक प्रभाव यह हुआ कि आगे के कवियों ने भी इस शैली में काव्य लिखना शुरू किया।

निराला की 'संध्यासुन्दरी' कविता में प्रकृति चित्रण, मानवीकरण आदि छायावाद युगीन प्रवृतियाँ सहज रूप में दिखायी देती हैं। इस कविता में प्रकृति के संध्या समय का वर्णन है। कवि-कल्पना यह है कि दिन के अन्त और रात के आरंभ की सन्धि वेला में आकाश से एक परी अन्धकार रूपी वस्त्र को लहराकर भूमि पर धीरे धीरे उतर रही है।

"दिवसावसान का समय-
मेघमय आसमान से उतर रही है
यह संध्या-सुन्दरी, परी-सी,
धीरे, धीरे, धीरे...।"[1]

यहाँ कवि ने प्रकृति के संध्या भाव को मानव रूप देकर एक सुन्दरी के रूप में चित्रित किया है। इसलिए यहाँ मानवीकरण अन्तर्लीन रहता है। संध्या समय प्रकृति में होने वाले परिवर्तन का सुन्दर और रोचक वर्णन इस कविता में प्रतिपादित है। सबको अपने मोह जाल में फंसाकर मदिरा की नदी बहाती हुई संध्या सुन्दरी भूमि पर आ रही है-

"मदिरा की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को वह सस्नेह
प्याला एक पिलाती,
सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह कितने मीठे सपने।" [2]

भाव यह है कि घोर अन्धकार में सब लोग सुप्तावस्था में रहते हैं। दिन भर काम करके थके हुए लोगों को मदिरा के आलस्य में चेतना शून्य बनाती हुई वह सुन्दरी आ रही है।यह निशा सुन्दरी सबको विस्मृति देकर, प्रेम पूर्वक सहलाकर सुला देती है।प्रस्तुत कविता में एक ओर घोर अन्धकारमय निस्तब्ध वातावरण का चित्रण है, तो दूसरी ओर रात भर चेतना शून्य रहने वाले लोगों की सुप्तावस्था का चित्रण है।

छायावाद के चार स्तंभ कवियों में से निराला और पंत प्रगतिवादी प्रवृत्तियों से युक्त रचनाएँ भी लिखते रहें। मानव-जीवन का यथार्थ चित्रण ही प्रगतिवादी कविताओं की मुख्य प्रवृत्ति रही।समाज में मुख्यतया दो प्रकार के लोग रहते हैं। एक तो सभी सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन बिताने वाले उच्चवर्ग, दूसरा भूखे-प्यासे रहकर दिन रात परिश्रम करके उच्चवर्गों की दास्यवृत्ति करने वाले निम्नवर्ग।

निराला की 'भिक्षुक','तोडती पत्थर' जैसी कविताओं में संघर्षमय जीवन बिताने वाले साधारण लोगों का मार्मिक चित्रण है। पूँजीवादी समाज में शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्तर पर निम्नवर्ग के लोग शोषण के शिकार बन रहे हैं। 'भिक्षुक' कविता में, समाज में सबके द्वारा उपेक्षित होकर, भूख से पीडित रहने वाले भिखारियों की बुरी हालत का चित्रण है।

"वह आता दो दूक कलेजे को करता
पछताता पथ पर आता...।"[3]

"पेट-पीठ दोनों मिलकर है एक"[4]

पंक्ति में भिखारी की गरीबी की तीव्रता रूपायमान होती है। पेट खाली होने के कारण, पीठ से मिलकर एक जैसा प्रतीत होता है। एक मुट्ठी भर अनाज के लिए सबके सामने हाथ फैलाने वाले भिखारी की दुरवस्था व्यक्त करने के लिए यहाँ दूसरे शब्दों की आवश्यकता नहीं है।

'तोडती पत्थर' कविता में एक मज़दूरिन की निराश्रयता और बेबसी का हृदय स्पर्शी वर्णन है। दोपहर के समय इलाहबाद के पथ पर बैठकर एक मज़दूरिन बड़े हथौडे से पत्थर पर बार-बार प्रहार कर रही है। वह जहाँ बैठती है, वहाँ कोई छायादार पेड़ नहीं है। "नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन"[5] पंक्ति में उस मज़दूरिन की विवशता, थकावट और कर्म-प्रियता दर्शनीय होती है। कठिन से कठिन धूप में काम करते रहने के कारण वह थकी हुई अवस्था में होती है। फिर भी अपने प्रिय-कर्म में वह पूर्ण रूप से लीन रहती है।थकावट और कर्म प्रियता के कारण ही यहाँ 'नत नयन' का प्रयोग किया गया है। पत्थर पर एकाग्र मन से बार-बार प्रहार करने पर ही उसका लक्ष्य साध्य होता है। यहाँ यह सिद्ध हो जाता है कि काम करते हुए आस-पास आँख फेरने का मौका उसको नहीं मिलता है।

कोई शिकायत के बिना, जीवन भर कठिन काम करने वाली मज़दूरिन की जीवन यातना और वेदना उसके रूप वर्णन में निर्भर रहती है।

"श्याम तन, भर बँधा, यौवन,
नत नयन, प्रिय कर्म रत मन,
गुरु हथौडा हाथ,
करती बार-बार प्रहार ।"[6]

कठिन धूप में बैठकर काम करते रहने के कारण ही उसका शरीर 'श्याम रंग' का हो गया। यौवन युक्त स्त्री होने पर भी प्रकाश और स्फूर्ति भरी आँखों के बदले, यहाँ 'नत-नयन' सूचित किया गया है। इन शब्दों के प्रयोग से कर्म करते रहने की उसकी विवशता भी व्यक्त हो जाती है।

अपनी और घरवालों की भूख मिटाने का दायित्व अपने ऊपर लेकर, उसके लिए कर्म रत बनने वाली स्त्री, सामाजिक प्रतिबद्धता से युक्त नारी है। यहाँ आश्रयहीन युवती स्वावलंबी बनकर, अत्यंत मनोबल से आगे जीने की इच्छा से कर्यरत रहती है। पत्थर टूट जाने पर ही उसको भूख मिटाने का वेतन मिलता है।'बार-बार प्रहार' में एक ओर उसकी कर्म-प्रियता और दूसरी ओर समाज में स्थित आर्थिक अव्यवस्था, अन्याय, अनीति, अत्याचार आदि पर उसका रोष प्रकट होता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जाय तो सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने छायावाद में पदार्पण करते हुए अपनी काव्य-प्रतिभा से हिन्दी काव्य क्षेत्र को एक नई चेतना प्रदान की है। यह भी उल्लेखनीय है कि छायावादी कवि होने के बावजूद निराला ने प्रगतिशील चेतना को लेकर कविता लिखते हुए हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा की ओर अग्रसर कर दिया है।

**सन्दर्भ**

1. संध्या सुन्दरी - निराला
2. वही
3. भिक्षुक - निराला
4. वही
5. तोडती पत्थर – निराला
6. वही